राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

छायावाद

नामवर सिंह

७

कल्पना के कानन की रानी

स्वाधीनता-आन्दोलन के दौरान भारतवासियों को पूर्ण रूप से राजनीतिक और आर्थिक स्वतन्त्रता भले ही न प्राप्त हुई हो, परन्तु मानसिक स्वाधीनता अवश्य प्राप्त हुई है। और कविता के लिए इस मानसिक स्वाधीनता का महत्त्व बहुत बड़ा है। मानसिक स्वाधीनता विचारों और भावों के अबाध प्रसार के लिए द्वार खोल देती है और छायावादी कवि के लिए इस मानसिक स्वाधीनता ने यही कार्य किया। नयी पीढ़ी के युवकों का हृदय पुरानी मर्यादाओं से मुक्त हुआ। परिपाटियों और सामाजिक विधि-निषेधों से छुट्टी मिली। औचित्य-अनौचित्य की नियमावली शिथिल हुई। इतना होना था कि हृदय से भावों का निर्झर फूट पड़ा। प्राणों से उच्छ्वास और आँखों से आँसू उमड़ चले। इसी उच्छ्वास और आँसू से छायावाद का आरम्भ हुआ। भावुकता कविता का पर्याय हो गयी।

इससे पहले के कवियों में हृदय का ऐसा अबाध आवेग नहीं मिलता। द्विवेदी-युग के कवि अपने भावों की अभिव्यक्ति के विषय में बड़े सतर्क थे। रीतिकाल के कवियों के लिए तो जैसे हृदय का कोई महत्त्व ही न था; उनकी सभी बातें इस कदर साँचे में ढली-ढलाई निकलती प्रतीत होती हैं कि उनसे व्यक्ति-वैशिष्ट्य का बोध ही नहीं होता। और सन्त-भक्त कवियों के संयम का क्या कहना! अपने भगवान् के सामने हृदय खोलकर रखते हुए भी भक्त संयत रहता था। भक्ति-भावना ने भक्त कवि के चित्त को सदैव सन्तुलित रखा। वहाँ गलदश्रु भावुकता की झलक भी कहीं-कहीं मिल जाती है, परन्तु उसमें भी एक प्रकार की मर्यादा है। भक्तों के यहाँ चित्त की अस्थिरता में भी

स्थिरता है, विह्वलता में भी धैर्य है, आवेग में भी विवेक है, आत्म-दुर्बलता में भी दृढ़ता है और सन्देह में भी विश्वास है।

परन्तु यही बातें छायावादी कवियों के विषय में नहीं कही जा सकतीं। छायावादी कवि अपने भावावेग में धीरज, विवेक और विश्वास को किस प्रकार भूल जाता है—इसे पन्त के 'उच्छ्वास', 'आँसू' और 'ग्रन्थि' में अच्छी तरह देखा जा सकता है।

जितनी विह्वलता छायावादी कवि की व्यथा में है, उतनी ही विह्वलता उसके उल्लास में भी है। इन्द्रधनुष को देखकर वह बच्चों की तरह उछल पड़ता है, जैसे उसने एकदम नयी चीज़ देख ली। वह अपने सुख और दुख की अनुभूति को थोड़ी देर के लिए भी रोकने में असमर्थ है। बिना किसी सोच-विचार और भय-संकोच के छायावादी कवि अपने हर्ष-शोक को ज्यों-का-त्यों प्रकट कर देता है।

इस भावावेग से छायावादी कविता में कुछ गम्भीरता की कमी भले ही आ गयी हो, परन्तु इसने जीवन और जगत् को समझने की एक बहुत बड़ी शक्ति दे दी और यह शक्ति है संवेदनशीलता। अक्सर ऐसा होता है कि विचारों से जहाँ हम नहीं पहुँच पाते, भावों से पहुँच जाते हैं। ऐन्द्रिय-बोध ज्ञान का पहला सोपान है। किसी वस्तु का ज्ञान हमें सबसे पहले ऐन्द्रिय-बोध से ही होता है, जिसे सामान्य व्यवहार की भाषा में हम अनुभव करते हैं। अनुभव की अवस्था में बोध्य-वस्तु हमारे भावों का ही विषय होती है। जब एक ही प्रकार के ऐन्द्रिय-बोध जगानेवाली अनेक वस्तुएँ हमारे अनुभव में आती-जाती हैं तो हम उन विशिष्ट अनुभवों के आधार पर एक सामान्य मत बनाते हैं और वही विचार होता है। तात्पर्य यह है कि भावावेग ही वह पहली मनःस्थिति है जिससे किसी वस्तु का ज्ञान होता है, और छायावाद में इसकी प्रधानता थी। इसीलिए जगत् और जीवन को समझने के लिए छायावादी कवियों को विशेष प्रकार की अन्तर्दृष्टि मिल गयी। छायावादी कवि प्रकृति और संसार के रहस्यों के विषय में जो इतने अधिक जिज्ञासु दिखायी पड़ते हैं, वह उसी अन्तर्दृष्टि का प्रमाण है। हर चीज़ के प्रति अथक जिज्ञासा और कुतूहल छायावाद का मंगलाचरण है, और यही वह रचनात्मक शक्ति है जिसके द्वारा कवि, दार्शनिक अथवा वैज्ञानिक अपने-अपने क्षेत्र में कोई नयी चीज़ दे जाता है। छायावाद में इस नयी शक्ति का उन्मेष था, इसलिए उसने हिन्दी-साहित्य को कुछ नया दिया। द्विवेदी-युग में अथवा रीति-काल में इसकी कमी थी, इसलिए इन युगों की रचनात्मक देन बहुत कम है।

दबे हुए मन में जिज्ञासा का उदय असम्भव है। रीतिकाल के कवियों के मन पर परिपाटियों का चिर-संचित भार था। इसलिए उनमें जीवन और